प्रेत लिखित शोध पत्रों से दवाइयों को बढ़ावा

हाल ही में पता चला है कि एक दवाई को जिन शोध पत्रों के आधार पर बढ़ावा दिया गया था, वे वास्तव में प्रेत लिखित थे। प्रेत लिखित होने का मतलब यह है कि इन शोध पत्रों को दवा कंपनियों द्वारा प्रायोजित कुछ लोग लिखते हैं और फिर इन्हें मशहूर वैज्ञानिकों के नाम से छापा जाता है। इस तरह के शोध पत्रों को अपने नाम से छापने देने के लिए इन वैज्ञानिकों को बाकायादा भुगतान भी किया जाता है।

वाशिंगटन के जॉर्जटाउन विश्वविद्यालय की एड्रियन फग-बर्मन का मत है कि व्येथ नामक दवा कंपनी द्वारा प्रायोजित प्रेत लिखित शोध पत्रों का ही असर था कि रजोनिवृत्त स्त्रियों के लिए हारमोन क्षतिपूर्ति चिकित्सा को बहुत बढ़ावा मिला जबकि इस बात के पर्याप्त प्रमाण मौजूद थे कि इस चिकित्सा से स्तन कैंसर का खतरा बढ़ता है।

दरअसल, यू.एस. की हज़ारों स्तन कैंसर पीड़ित महिलाओं ने फाइज़र कंपनी पर हर्ज़ाने का मुकदमा ठोंका है। गौरतलब है कि फाइज़र ने व्येथ कंपनी को खरीद लिया है। फग-बर्मन इस मुकदमे में विशेषज्ञ गवाह हैं। उन्होंने हारमोन चिकित्सा से सम्बंधित करीब 1500 दस्तावेज़ों का विश्लेषण करने पर पाया कि ऐसे दर्ज़नों शोध पत्रों में हारमोन क्षतिपूर्ति चिकित्सा प्रेम्प्रो से सम्बंधित तमाम विवादास्पद बयान मौजूद हैं। ये शोध पत्र व्येथ द्वारा तैयार करवाए गए थे और डॉक्टरों व वैज्ञानिकों के नाम से प्रकाशित हुए थे।

मसलन, 2002 में एक बड़े अध्ययन में पता चला था कि हारमोन क्षतिपूर्ति चिकित्सा से हृदय रोगों में कोई कमी नहीं आती है और स्तन कैंसर का खतरा बढ़ता है। इसके बावजूद इस ट्रायल के परिणाम प्रकाशित होने के बाद भी प्रेत लिखित शोध पत्रों में जानबूझकर इस अध्ययन को कमज़ोर साबित करने की कोशिश की गई थी। इन प्रेत लिखित शोध पत्रों में यहां तक कहा गया था कि प्रेम्प्रो से स्तन कैंसर के जोखिम के सम्बंध में कोई आम सहमति नहीं है जबकि उक्त अध्ययन ने साफ तौर पर इस खतरे के प्रमाण दिए थे। ***(स्रोत फीचर्स)***